ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष ७२ अंक ९ मई २०२५ ज्येष्ठ संवत् २०८२ वार्षिक मूल्य १५०रु०

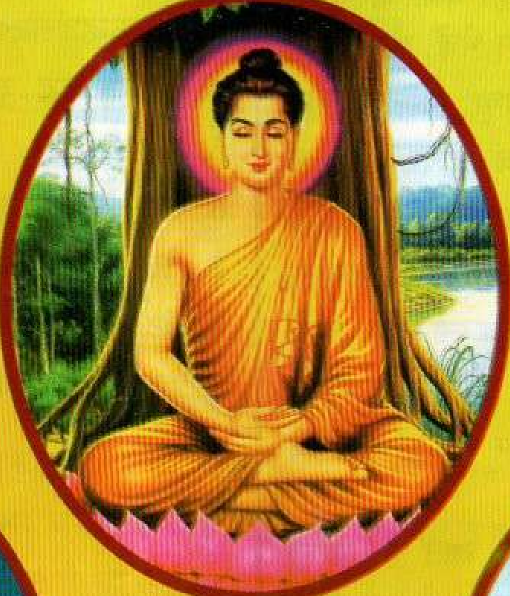

महात्मा बुद्ध

कन्हई लाल शहीद

गोपी मोहन साह शहीद

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० प्रिंस आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा '**व्यवस्थापक सुधारक**' के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

—व्यवस्थापक

वर्ष 72 अंक: 9

मई 2025 विक्रमाब्द 2082

दयानन्दाब्द 201 कलिसंवत् 5125

सृष्टिसंवत्- 1, 96, 08, 53, 126

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वेदोपदेश	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	श्री कन्हाईलाल शहीद के दर्शन	5
4.	महात्मा बुद्ध कब हुये?	8
5.	महान योद्धा- महाराणा सांगा	12
6.	रजन जयन्ती का निमंत्रण	17
7.	तेल, घी, चिकनाई व मोटापा एक चुनौति	21
8.	लूट का सिस्टम	24
9.	प्रकाशनार्थ सूचना	24

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

वेदोपदेश

ओ३म्

को नानाम वचसा सोम्याय, मनायुर्वा भवति वास्ते उस्राः।
क इन्द्रस्य युज्यं कः सखायं भ्रात्रं वष्टि कवये क ऊती॥ ऋक्०: 4.25.2 ॥

यह दुनियां किधर जा रही है ? क्या करना चाहिये और क्या कर रही है ? लोग न जाने किन किन जड़ और चेतन मूर्तिओं के सामने झुकते हैं, पर कौन है जो कि अपने प्रभु परमेश्वर के सामने झुकता है ? उस अमूर्त के सामने भौतिक रूप से झुकना तो हो नहीं सकता, मानसिक और बाहरी वाणी से ही हो सकता है, तो कौन है जो उस प्रभु के सम्मुख वाणी द्वारा, विचार द्वारा व प्रार्थना द्वारा नम्र होता है ? वह तो सोम्य है, हमारे सम्पूर्ण सोम का पात्र है। हमें अपने सब भोग्य पदार्थों को, अपने सब ऐश्वर्यों को उसके सामने झुका देना चाहिये, उसे समर्पित कर देना चाहिये। नहीं, हमें तो अपने सब सोमसहित अपने आप को ही उसके चरणों में समर्पित कर देना चाहिये। पर उस जगत् के एक मात्र स्वामी का भी इन में से कौन है जो सच्चा पूजन करता है? उस का मनन करना तो मुश्किल है, पर कौन है जो उसके मनन करने का इच्छुक भी होग है? कौन है जो मनन द्वारा उस इन्द्र की ज्ञानरूप किरणों को अपने में धारण करता है? अथवा इन इन्द्रियों को ही 'उस्र' समझो जो उस इन्द्र की हैं, जो उस इन्द्र की गौएं या किरणें हैं। तो कौन है जो इन इन्द्रियों को या इन शरीरों को उस इन्द्र के समझकर वस्त्र की तरह ओढ़ता है, असंग होकर धारण करता है ? हम दुनियां में नाना प्रकार के (धनी मानी ज्ञानी आदि) लोगों को अपना साथी संगी, इष्टमित्र, भाई बन्धु बनाते फिरते हैं, बनाते हैं और मानते हैं, पर कौन है जो उस इन्द्र को अपना साथी बनाना चाहता है ? कौन है जो उसे सखा करना चाहता है, और ऐसा विरला कौन है जो उससे भ्रातृभाव स्थापित करना चाहता है ? उस कान्तदर्शी सर्वज्ञ पुरुष के लिये कौन है जो इतनी क्रान्ति, प्रीति व भक्ति रखता है ? ओह ! इस दुनियां में हम अंधाधुंध अपने काम करते जा रहे हैं, पर जो इस दुनियां का असली स्वामी है, जो हमारा सब कुछ है, जो हमारा अपना है उसकी तरफ हम कुछ भी ध्यान नहीं दे रहे। हम क्या कर रहे हैं ?

शब्दार्थ -

(सोम्याय) सोम के योग्य इन्द्र के लिये (कः) कौन (वचसा) वाणी द्वारा (ननाम) नमन करता है ? (वा) अथवा कौन है जो उस इन्द्र के (मनायुः) मनन करने की इच्छा वाला (भवति) होता है ? कौन उसकी (उस्रः) किरणों व गौओं को (वास्ते) धारण करता है ? (कः) कौन (इन्द्रस्य) इन्द्र के (युज्यं) साथ की, (कः) कौन उसकी (सखायं) मैत्री की (भ्रात्र (या भ्रातृभाव की (वष्टि) कामना करता है ? (कः) कौन (कवये) उस क्रान्तदर्शी इन्द्र के लिये (ऊती) कान्ति, प्रीति व भक्ति को रखता है ?

सम्पादकीय

क्या ऋषि दयानन्द जी आर्यसमाज की स्थापना नहीं करना चाहते थे?

❑ प्रस्तुति विरजानन्द दैवकरणि, 9416055702

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मंत्री श्री विनय आर्य का एक साक्षात्कार वायरल हो रहा है, उसमें यह सज्जन स्पष्ट कह रहे हैं कि स्वामी दयानन्द जी खुद आर्यसमाज की स्थापना नहीं करना चाहते थे। इन मंत्री जी का यह कथन सर्वथा असत्य और अप्रामाणिक है। आगे अनेक प्रमाण दिये जा रहे हैं। स्वामी जी महाराज ने जहां मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की उसकी सूचना पत्र द्वारा देते हुए श्री गोपालराव हरिदेशमुख को आदेश दिया कि आप लोग भी वहां आरम्भ कर दीजिए। विलम्ब मत कीजिए। नासिक में भी होने वाला है। विवाह, मृत्यु, उत्साह व प्रसन्नता के समय आर्यसमाज के लिए दान-पुण्य अवश्य करना चाहिए। जब तक नौकरी करने वाला तथा नौकर रखने वाला आर्यसमाजस्थ मिले तब तक अन्य को न रखना और न रखाना। यह पत्र ऋषि जी ने 11 अप्रैल 1875 को लिखा था।

10 अगस्त 1875 को महादेव गोविन्द रानाडे को पत्र लिखा कि आप पूना में आर्यसमाज की स्थापना करने वाले हैं। 16 सितम्ब 1875 को गोपालराव हरिदेशमुख को पत्र लिखा कि पूना में आर्यसमाज स्थापना हो गया है।

10 दिसम्बर 1877 को आर्यसमाज लाहौर को पत्र लिखा कि अमृतसर आर्यसमाज का उत्साह वृद्धि को प्राप्त होता जाता है। 7 जनवरी 1878 को पं. कालूराम को पत्र से सूचना दी कि रावलपिण्डी में आर्यसमाज हो गया है। जेहलम में भी होने की आशा है। पंजाब में बहुत ठिकाने समाज बन गये हैं। वेद धर्म की बड़ी उन्नति है। 16 जनवरी 1878 को मुंशी इन्द्रमणि को पत्र लिखा कि गुजरात फतेहगढ़ और वजीराबाद में कुछ लोग आर्य समाजी हो गये हैं। 29 मार्च 1878 की लाला पोहलूराम मंत्री आर्यसमाज गुजरावाला को पत्र लिखा कि मुलतान में समाज होने वाला है। 31 मार्च 1878 को बाबू माधोलाल दानापुर को आर्यसमाज के नियम भेजे। 13 अप्रैल 1878 को पं. रामनारायण को सूचित किया कि मुलतान में भी आर्यसमाज हो गया है। 26 जून 1878 को आर्यसमाज गुजरावाला को पत्र लिखा कि प्रतिदिन आर्यसमाज की उन्नति करते रहो क्योंकि यह बड़ा काम आप लोगों ने उठा लिया है। इसको परिणाम पर्यन्त पहुंचाने में ही लाभ है। अमृतसर का समाज प्रतिदिन उन्नति पर है।

आर्य समाज की उन्नति और प्रतिष्ठा को देखकर 29 मई 1878 को अमेरिका से कर्नल अल्काट ने स्वामी जी को पत्र लिखा कि हमारी थियोसोफिकल सोसायटी आपके आर्यसमाज की

एक शाखा के रूप में प्रसिद्ध हो जावे। इसी विषय के अनेक पत्र कर्नल अल्काट ने अगस्त 1878 तक लिखे हैं। 15 अगस्त 1878 को रुड़की (सहारनपुर) से बाबू माधोलाल दानापुर (पटना) को पत्र दिखा कि अपने आर्यसमाज की उन्नति करते रहो। 17 अगस्त 1878 को आर्य समाज मुलतान के मंत्री को पत्र लिखा कि रुड़कियों में दृढ़ आशा है कि आर्यसमाज अवश्य बन जायेगा। इसीदिन रुड़की में समाज बनने की आशाविषयक पत्र लालामूलराज एम.ए. को भी लिखा था। 25 अगस्त 1878 को लाला मूलराज लाहौर को पत्र लिखा कि रुड़की में आर्यसमाज बन गया है। 1 सितम्बर 1878 को पं. रामनारायण को पत्र द्वारा सूचित किया कि रुड़की में आर्यसमाज बन गया है और आशा है यहाँ मेरठ में भी हो जावेगा। आर्यसमाज शाहजहांपुर की चर्चा एक विज्ञापन में है। 23 सितम्बर 1878 को बाबू माधोलाल दानापुर को पत्र से सूचना दी कि मेरठ में आर्यसमाज हो गया है। इसी की सूचना 15 अक्टूबर 1878 को माधोलाल जी आर्यसमाज दानापुर को दी है कि मेरठ में मैंने समाज स्थापित किया है। बाबूरामाधार वाजपेई को भी मेरठ में आर्यसमाज स्थापना की सूचना भेजी है। 17 अक्टूबर 1878 को अजमेर कॉलेज से जुगल बिहारी शर्मा ने पत्र लिखा है कि यहाँ आर्यसमाज जारी करने का विचार है। 26 अक्टूबर को बाबूमाधोलाल आर्यसमाज दानापुर को लिखा कि मैं आशा करता हूं कि दिल्ली में समाज स्थापित हो जावेगा।

30 अक्टूबर 1878 को पं. श्याम जी कृष्णवर्मा को दिल्ली से पत्र द्वारा सूचना दी कि दिल्ली में 3 नवम्बर रविवार को आर्यसमाज का आरम्भ हो जायेगा। 31 अक्टूबर 1878 को गण्डासिंह जी रोपड़ (अम्बाला) कके पास दिल्ली से पत्र लिखा कि आर्यसमाज यहां पर कायम हो गया है और बहुत से मौजिज लोग उसमें शरीक हैं और रोज-व-रोज तरक्की होती जाती हैं और ऐसे ही रुड़की व सहारानपुर व मेरठ व लुधियाना में बहुत आर्यसमाज कायम हो गये हैं। अब दुनियां से अन्धकार जाने वाला है और सत्य का प्रकाश होता जाता है। 2 नवम्बर 1878 को पं. गोपालराव हरिदेशमुख को सूचना दी कि यहां दिल्ली में आर्यसमाज नियत हो गया है। 4 नवम्बर 1878 को पं. सुन्दरलाल रामनारायण को सूचना दी कि दिल्ली में आर्यसमाज हो गया है।

20 जनवरी 1878 को लालारामशरणदास को मेरठ से पत्र लिखा कि आर्यसमाज की तरफ से एक छापाखाना जारी किया जावे, उसमें दो सौ रुपये मेरी ओर से हिस्सा शामिल कर लें। 4 मार्च 1978 को पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा को पत्र लिखा- जो तुमने मुम्बई के समाज के विषय में

लिखा कि न आओगे तो यहां का आर्यसमाज टूट जाएगा, क्या तुमने समाज हरिश्चन्द्र चिन्तामणि के ही भरोसे किया था और जो मेरे आने जाने पर ही समाज की स्थिति है तो मैं अकेला कहां-कहां जा सकता हूँ समाज में आयोग्य प्रधान हो उसको छुड़ाकर दूसरा नियत करके समाज का काम ठीक-ठीक चलाना चाहिए। एक विज्ञापन पत्र आर्यसमाज मुरादाबाद, शाहजहांपुर, मेरठ, लाहौर, गुरदासपुर, अमृतसर, दानापुर के पास भेजा था। 22 जुलाई 1880 को मेरठ से मुंशी बख्तावर सिंह को लिखे पत्र में आर्यसमाज फर्रूखाबाद, दानापुर, रुड़की, देहरादून, सहारनपुर की चर्चा की गई है। 12 सितम्बर 1880 के पत्र में आर्यसमाज फिरोजपुर की चर्चा है, यह पत्र मुंशी बख्तार सिंह को भेजा गया था। इस प्रकार महर्षि दयानन्द जी के पत्र व्यवहार से सिद्ध है कि उन्होंने अपने जीवन काल में अनेक नगरों में आर्यसमाजों की स्थापना की थी। आर्यसमाज के द्वारा महर्षि जी लोकोपकार होना, अज्ञानान्धकार दूर करना, वेदप्रचार होना आदि अनेक प्रकार के लाभ होने की आशा रखते थे।

सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं- इसलिए जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा।

इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् उन्नति देवें तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है एक का नहीं।

इस प्रकार इस संक्षिप्त विवरण से यह सुतरां सिद्ध है कि देशोपकार की दृष्टि से ऋषिवर आर्यसमाज की स्थापना करना अत्यावश्यक समझते थे। वे भविष्य द्रष्टा थे, कि उनके बाद आर्यसमाज ही देशोपकार के कार्यकर सकेगा। इसलिए दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विनय आर्य का यह कथन निराधार है कि स्वामी दयानंद जी स्वयं आर्यसमाज की स्थापना नहीं करना चाहते थे। पाठक विचारें कि जितने आर्यसमाज ऋषिजी ने अपने जीवन काल में स्थापित किये वे किसी के दबाव में किये थे या स्वेच्छा से। श्री विनय जी के कथन से तो ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामीजी स्वयं आर्यसमाज की स्थापना नहीं करना चाहते थे, परन्तु किसी अन्य के दबाव में स्थापना की होगी।

एक उत्तरदायित्व वाली सभा के अधिकारी को ऐसा बयान नहीं देना चाहिए, जिससे जनता में भ्रम उत्पन्न होने की सम्भावना है। आशा है कि विनय जी अपने कथन पर दोबारा विचार करेंगे और अपनी भावना जनता के सम्मुख रखकर स्पष्टीकरण करेंगे।

10 मई 1857 की क्रान्ति की स्मृति में

भारत को स्वतन्त्र कराने वाले वीरों पर अंग्रेजों द्वारा किये गये अत्याचारों की एक झलक ऐसे अत्याचार लाखों भारतवासियों पर किये गये थे। उनमें देशद्रोहियों की बड़ी भूमिका रहती थी, जो लोभ के कारण अपने देशभक्त साथियों को पकड़वा दिया करते थे।

-सम्पादक की ओर से

श्री कन्हाईलाल शहीद के दर्शन

❑ लेखक- **मन्मथनाथ गुप्त,** प्रसिद्ध क्रान्तिकारी

मोतीलाल राय ने कन्हाईलाल पर एक पुस्तक लिखी है ये बंगाल के एक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी तथा लेखक थे। कन्हाई की फाँसी के बाद इनको तथा कुछ अन्य लोगों को जेल के अन्दर कन्हाई की लाश ले आने की आज्ञा मिली थी, उस समय का जो मार्मिक वर्णन उन्होंने लिखा है उसे हम उद्धृत करते हैं-

''पाँच छः आदमियों को भीतर जाने की आज्ञा मिली। एक गोरे ने हमसे जानना चाहा कौन-कौन भीतर जाना चाहता है। आशु बाबू (कन्हाई के बड़े भाई) मैं और कन्हाई परिवार के अन्य तीन व्यक्ति थर-थर काँपते हुए उस गोरे के पीछे हो लिये। शोक और दुःख से हम सिहर रहे थे। लोहे के फाटकों को पार कर हम लोग जेल के भीतर दाखिल हुए, यन्त्र की पुतली की भाँति हम उस गोरे के पीछे-पीछे चल रहे थे। एकाएक वह गोरा रुक गया, और उसने एक उँगली के इशारे से एक कोठरी दिखा दी। सिर से पैर तक कम्बल से ढकी हुई एक लाश पड़ी थी, यही कन्हाई की लाश थी। हम लोगों ने लाश उठाकर कोठरी के आँगन में रख दी, किन्तु किसी को भी यह हिम्मत न होती थी कि लाश के ऊपर से कम्बल उतारे। आशु बाबू के चेहरे पर से मोतियों के समान बूँदें टपकने लगीं। एक एक करके सभी रोने लगे। उसी समय गोरा बोल उठा, ''आप लोग रोते क्यों हैं? जिस देश में ऐसे वीर पैदा होते हैं, वह देश धन्य है। मरेंगे तो सभी, किन्तु ऐसी मौत कितने मरते हैं?''

''हमने विस्मित नेत्रों से आँख उठाकर उस कर्मचारी को देखा तो मालूम हुआ कि उसके चेहरे पर भी आँसुओं की झड़ी लगी है। उसने कहा, मैं इस जेल का जेलर हूँ, कन्हाई के साथ मेरी खूब बातें हुआ करती थीं। फाँसी की सजा सुनाये जाने के बाद से उसकी खुशी का कोई वार-पार नहीं था, कल शाम को उसके चेहरे पर जो मोहनी हँसी मैंने देखी, वह कभी न भूलूँगा। मैंने कहा, कन्हाई आज हँस रहे हो, किन्तु कल मृत्यु की कालिमा से तुम्हारे ये हँसते हुए ओठ काले पड़ जायेंगे। दुर्भाग्य से कन्हाई की फाँसी होने के समय भी मैं वहीं पर था, कन्हाई की आँखें बाँध दी गई थीं, वह शिकंजे में कसा जाने वाला ही था, ठीक उस समय कन्हाई ने

घूरकर मेरी ओर संकेत किया और कहा, ''क्यों मिस्टर, मुझे आप कैसा देख रहे हैं?'' और यह वीरता, इस प्रकार की वीरता का होना रक्त-मांस के मानवों के लिये सम्भव नहीं।''

''हमने चकित होकर ये बातें सुनीं। इसके बाद डरते-डरते ओढ़ाये हुए कम्बल को उठाकर उसे देखा, अर्थात् उस तपस्वी कन्हाईलाल के दिव्य स्वरूप के वर्णन की भाषा मेरे निकट नहीं है। लम्बे-लम्बे बालों से चौड़ा माथा ढका हुआ था, अधखुले नेत्रों से अमृत ढलक रहा था, दृढ़बद्ध ओठों से संकल्प की रेखा फूट पड़ती थी, विशाल भुजाओं से मुट्ठियाँ बँधी हुई थीं। आश्चर्य है कि कन्हाई के किसी भी अंग पर मृत्यु की मनहूस छाप नहीं थी, कहीं भी बीभत्सता के चिह्न न थे, केवल दोनों कंधो फांसी की रस्सी की रगड़ से नमित हो गये थे, उसके पवित्र मुख-श्री पर कहीं विकृति न थी। कौन ऐसा अभागा है जो इस मृत्यु पर ईर्ष्या न करेगा ?

कन्हाई की लाश को बड़े समारोह के साथ जलाया गया, हजारों की तादाद में लोग इकट्ठे थे। हजारों रोने वाले थे, जब कन्हाई जलकर खाक हो गया तो उसकी राख को लोगों ने गंडा ताबीज बनाने के लिये लूट लिया। कन्हाई को एक शहीद का सम्मान दिया गया, यह बात ब्रिटिश साम्राज्यवाद के लिए कितनी अखरने वाली थी कि जिसको हत्यारा कहकर फाँसी पर चढ़ा दिया उसे जनता ने शहीद करके पूजा...।

कन्हाई पर उस युग का सार्वजनिक मत

कन्हाई की फाँसी पर जनमत किस प्रकार उत्तेजित हुआ था, यह 12 सितम्बर 1908 के ''वन्दे मातरम्'' के एक लेख से पता लगता है, उसमें लिखा था-

''कन्हाई ने नरेन को मार डाला। कोई भी अभागा भारतवासी जो अपने साथियों का हाथ चूम लेने के बाद उनके साथ विश्वासघात करता है, अब से अपने को प्रतिहिंसा लेने वाले से बेखतरा नहीं समझेगा।''

एक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी गोपीमोहन साहा

भारतीय पुलिसवालों में सर चार्लस टेगर्ट क्रान्तिकारियों के विषय में विशेषज्ञ समझे जाते थे, सैकड़ों क्रान्तिकारियों को वे गिरफ्तार करवाकर फाँसी के तख्ते पर तथा समुद्र पार कालेपानी भिजवा चुके थे। बहुत दिनों से क्रांतिकारी उनकी टोह पर थे, किन्तु वे किसी प्रकार हत्थे पर चढ़ते नजर नहीं आते थे। **नतीजा यह था कि एलिशियम रो में क्रांतिकारियों के साथ पैशाचिक अत्याचार कर, उनको पीटकर, उनका वीर्य स्खलित करवाकर, उनको नंगा कर तथा उन पर टट्टी की बालटी उलटाकर उनसे बयान लेने की कोशिश उसी प्रकार जारी थी।** इनके सहकारियों में **लोमैन** थे। वसन्त चटर्जी तो प्राक् असहयोग युग में ही यमपुर भेज दिये गये थे। क्रांतिकारियों की एक टोली ने सोचा कि टेगर्ट साहब को क्यों न उसी लोक में भेजा जाय जहाँ वे सैकड़ों माँ के लाड़लों को भेज चुके हैं, ताकि वे वहाँ जाकर उन पर निगरानी रख सकें ? इन नवयुवकों में गोपीमोहन साहा भी एक थे। साहा

को मिस्टर टेगर्ट को मारने की धुन इस प्रकार सवार हुई कि वे दिन-रात उन्हीं की फिराक में घूमने लगे, साथ में एक भरा हुआ तमंचा रहता था। इधर टेगर्ट साहब इतने सावधान थे कि वे कहीं मिलते ही न थे, गोपीमोहन भी छोड़ने वाले जीव न थे, वे तो दीवाने हो चुके थे। वे टेगर्ट साहब के कूचे में रोज बीस-बीस फेरा करने लगे। एक दिन जब साहा इसी प्रकार घूम रहे थे, टेगर्ट साहब के बंगले से एक अंग्रेज निकला, गोपीमोहन चौकन्ने हो गये। उन्होंने दिल में कहा-हां यह टेगर्ट है, वह तो टेगर्टमय हो चुके थे, फिर क्या था। प्यासा ज़ैसे पानी के पास दौड़ता है, उसके पास पहुँचे। हाथ में वही चिरसाथी बदले का भूखा तमंचा था। धाँय! धाँय!! धाँय !!! दनादन गोलियाँ चलीं, वह अंग्रेज वहीं ढेर हो गया, साहा ने समझा उनका प्रण पूरा हो गया। किन्तु यह व्यक्ति जो मारे गये, टेगर्ट नहीं थे, बल्कि कलकत्ते के एक अंग्रेज व्यापारी मिस्टर डे थे, गोपी मोहन साहा गिरफ्तार कर लिये गये थे और बाद को उनको फाँसी की सजा दी गई। गोपी मोहन को जब मालूम हुआ कि उन्होंने एक गलत आदमी की हत्या की है तब उसे बड़ा दुःख हुआ, उसने अदालत में साफ-साफ कहा- ''मैं तो टेगर्ट को मारना चाहता था, मुझे बड़ा दुख है कि मैंने एक निर्दोष को मार डाला।

गोपीमोहन साहा पर जेल में बहुत अत्याचार किये गये, उस समय जेल में रहने वाले नजरबन्दों से मुझे मालूम हुआ है कि उन्हें बर्फ में गाड़ दिया गया था ताकि वे मुखबिर हो जायँ, किन्तु वे साम्राज्यवाद की सब चालों को व्यर्थ करते रहे। नजरबन्दों से यह भी बात मुझे मालूम हुई है कि जिस कोठरी में गोपी साहा रक्खे गये थे उस कोठरी में उनकी फाँसी के बाद लोगों ने बहुत दिनों तक यह वाक्य दीवार पर लिखा देखा था-

''भारतीय राजनीति क्षेत्रों में अहिंसार स्थान नेई''

याने भारतीय राजनीति क्षेत्र में अहिंसा का कोई स्थान नहीं है।

बंगाल में आतंकवाद का उग्र रूप

बंगाल में सरकार ने जो अत्याचार किये हैं उनको सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते है। क्रांतिकारी लड़कों के सामने माँ को नंगी करके उससे बलात्कार करने की धमकी दी गई, क्रांतिकारियों के घर भर, यहाँ तक कि मुहल्लों वालों को बुरी तरह से पीटा गया, कई अभियुक्तों को जेल में मारते-मारते मार डाला गया, सूर्यास्त और सूर्योदय के बीच कोई भी नौजवान घर से बाहर नहीं निकल सकता था, दिन में भी नौजवानों के साथ शनाख्त का कार्ड होना जरूरी था। ये सब अत्याचार सारे हिन्दुस्तान के सामने हुए, किन्तु गांधी जी के चलाये अहिंसा के भयंकर भूत के कारण काँग्रेस ने इसे उतने जोर से नहीं उठाया, जितना उठाना चाहिये था।

बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर

महात्मा बुद्ध कब हुये ?

❑ प्रस्तुति विरजानन्द दैवकरणि, 9416055702

भारतीय इतिहास में महात्मा बुद्ध का विशेष स्थान है। इतने विशिष्ट महापुरुष के जन्म और मृत्यु के विषय में इतिहासकार अभी तक एक मत नहीं हो पाये हैं। आज महात्मा बुद्ध के जन्म और निर्वाण के विषय में 23 विभिन्न मत प्रचलित हैं।

महात्मा बुद्ध के काल विषय में तीन परम्परायें चल रही हैं-

1. श्रीलंका की बौद्ध परम्परा। इसमें बुद्ध का निर्वाण काल 543 वर्ष ईसवी पूर्व हुआ मानते हैं। यह दक्षिण बौद्धों की मान्यता है।

2. तिब्बत, चीन, जापान, नेपाल आदि उत्तरीय देशों की बौद्ध परम्परा के अनुसार निर्वाणकाल 638 वर्ष ईसवी पूर्व है। इस परम्परा में 950, 1130, 1045, 1070 आदि कई मान्यतायें और भी हैं।

3. भारतीय संस्कृत साहित्य की पुराण आदि ग्रन्थों की परम्परा। इसके अनुसार लगभग 1800 वर्ष ईसवी पूर्व महात्मा बुद्ध का समय निर्धारित होता है।

चीनी यात्री ह्यूनसांग नालन्दा विश्वविद्यालय में अनेक वर्षों तक शीलभद्रादि बौद्ध आचार्यों से शिक्षा ग्रहण करता रहा था। उसके समय में ही उससे 900, 1000, 1200, 1300 और 1502 वर्ष पूर्व महात्मा बुद्ध का निर्वाण माना जाता था। दूसरे चीनी यात्री फाह्यान ने लिखा है-

मूर्ति की स्थापना बुद्धदेव के परिनिर्वाण काल से तीन सौ वर्ष पश्चात् हुई। उस समय हान देश में चाववंशी राजा पिग का राज था। राजा पिग का राजकाल 750 से 719 ई. पू. तक था। इसके अनुसार महात्मा बुद्ध का निर्वाणकाल 1050 ईसवी पूर्व सिद्ध होता है।

आजकल पाश्चात्य परम्परा के अनुसार पठित इतिहासविद् तथा उनके भारतीय शिष्य लंका की परम्परा वाली 543 वर्ष ईसवी पूर्व की तिथि को ही सही मान रहे हैं। चीन आदि की परम्परा को भी वे लोग स्वीकार नहीं करते। जब बौद्ध ग्रन्थों में ही अपने धर्मगुरु के समय के विषय में इतनी भ्रांतियां और मतभेद हैं तो वे अन्य ऐतिहासिक तथ्यों का कालक्रम कितना सही रख सकते हैं, यह भी एक चिन्तनीय विषय है। बौद्ध ग्रन्थ दशरथजातक में सीता को राम की भगिनी (बहन) लिखा है। ऐसे बौद्ध ग्रन्थों को प्रामाणिक मानना कितना न्यायसंगत है, इसे सुधी पाठकजन स्वयं विचार सकते हैं।

प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार पुराणों में महाभारत युद्ध के पश्चात् के भारतीय राजाओं की वंशावलियां राजवर्ष पूर्वक दी हुई हैं। महात्मा बुद्ध के समकालीन शासकों की वंशावली से महात्मा बुद्ध का सही समय ज्ञात किया जा सकता है। वह इस प्रकार है-

महाभारत युद्ध के पश्चात्

सोमाधि से रिपुञ्जय तक 22 बार्हद्रथ राजाओं का राज्यकाल- 1000 वर्ष

5 प्रद्योतवंशीय राजाओं का राजकाल - 138 वर्ष

शैशुनाग वंशीय छठे राजा के आठवें वर्ष तक-172

1310 वर्ष

(अजातशत्रु छठा शासक था) महाराज अजातशत्रु के सिंहासनारूढ़ होने के 8 वर्ष पश्चात् महात्मा बुद्ध परिनिर्वाण को प्राप्त हुये थे।

महाभारत युद्ध से अजातशत्रु तक 1310 वर्ष बीत चुके थे। महाभारत युद्ध को आज विक्रमसंवत् 2041(1993 ई.सन्) तक 5130 वर्ष व्यतीत हो गये हैं। इस प्रकार महात्मा बुद्ध को आज 5130-1310=3820 वर्ष के लगभग हो चुके हैं।

यद्यपि पुराणों में दी गई वंशावलियों की वर्षसंख्या में विभिन्नता भी है, यह भिन्नता काल, स्थान और लेखकभेद से आगई है। इन सबके आधार पर एक शुद्ध वंशावली तैयार की जानी चाहिये।

महाभारत युद्ध के पश्चात् बृहद्रक्षण की 24 वीं पीढ़ी में महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ था। इनके पश्चात् शासक और भी हुये। उन 24+6=30 शासकों ने 1504 वर्ष तक राज किया। इनकी 24वीं पीढ़ी अर्थात् महात्मा बुद्ध के समय मगध शासकों की 31, 32 और 33 वीं पीढ़ी चल रही थी। ये थे क्षत्रोजा बिम्बिसार और अजातशत्रु। जब महात्मा बुद्ध 72 वर्ष के थे तब अजातशत्रु राज्यसिंहासन पर आसीन हुये थे। महात्मा बुद्ध ने 80 वर्ष की आयु पाई। अर्थात् अजातशत्रु के आठवें राज्य वर्ष में महात्मा बुद्ध का निर्वाण हुआ था।

कश्मीर के इतिहासग्रन्थ राजतरंगिणी से भी महात्मा बुद्ध अतिप्राचीन सिद्ध होते हैं। राजतरंगिणीकार कल्हण ने कश्मीर के राजा अभिमन्यु के पुत्र गोनन्द तृतीय से लेकर अपने समय (1148ई.) ई. तक के राजाओं का 2330 वर्षों का इतिहास लिखा है। अर्थात् 2330-1148=1182 ईसवी पूर्व में गोनन्द तृतीय कश्मीर में राज्य कर रहा था। उसके पिता अभिमन्यु ने 52 वर्ष तक शासन किया। 1182+52=1234 वर्ष ईसा पूर्व में कश्मीर पर अभिमन्यु राज्य कर रहा था। उसी समय उसके पूर्वज कनिष्क का 60 वर्षीय शासनकाल समाप्त हुआ था। इससे सिद्ध हुआ कि 60+1234=1294 ई. पूर्व में कनिष्क का राज्य प्रारम्भ हुआ था। आज विक्रमसंवत् 2050 (सन् 1993) में कनिष्क को 1294+1993 ई. सन् =3287 (तीन हजार दो सौ सत्तासी) वर्ष हो चुके हैं। बौद्ध विद्वान् नागार्जुन कनिष्क के समय में ही कश्मीर में गया था। वर्तमान इतिहासवेत्ता कनिष्क को 78 ई. सन् में मानते है अर्थात् आज से 1915 वर्ष पूर्व।

राजतरंगिणी के अनुसार कनिष्क के समकालीन लोकधातु से 150 वर्ष पूर्व महात्मा बुद्ध का निर्वाण हुआ था। इसके अनुसार 150+1224 (कनिष्क का समय)=1444 वर्ष

ईसा पूर्व (1444+1993 ई. सन्)=3437 (तीन हजार चार सौ सैंतीस) वर्ष पूर्व महात्मा बुद्ध का निर्वाण हुवा था। पुराणों और राजतरंगिणी के लेखों का सामञ्जस्य बैठाने का यत्न करना चाहिये, जिससे दोनों के अन्तर का पता लगाया जा सके। इतना होने पर भी वर्तमान इतिहासकारों द्वारा मानी हुई छठी शताब्दी ईसा पूर्व की तिथि तो नितान्त ही अग्राह्य है। किसी भी शिलालेख आदि का साक्षात्प्रमाण अभी तक कोई विद्वान् नहीं दे पाया है। क्योंकि शिलालेखों पर प्राय: करके प्रचलित संवत् न लिखकर राज्यवर्ष अथवा अपने अपने कुलों के संवत् लिखे मिलते हैं। इनका अर्थ प्रायश: खींचतान करके ही लगाते हैं। कोई भी विद्वान् मूल लेख को न देखकर पहले के लिखे पढ़े लेखों का ही उद्धरण मात्र देते चले आते हैं। मूललेख की चर्चा में यह बता देना अप्रासंगिक नहीं होगा कि बहुत से विद्वानों से मैंने जानना चाहा कि वह यूनानी मूल लेख क्या है जिसके आधार पर 326 ई. पू. में सिकन्दर का भारत आना बताया गया है तो कोई भी नहीं बता पाया। मूल लेख में तो 326 ईसा पूर्व पद नहीं होगा। इसी प्रकार सभी कालों में किया गया है।

प्रसंगवश कनिष्क की भी एक चर्चा करना अनुपयुक्त नहीं होगा। राजतरंगिणी के अनुसार कनिष्क, हुष्क (हुविष्क) और जुष्क ने एक साथ राज्य किया था। वर्तमान इतिहासकार इन तीनों को पृथक् पृथक् समय में मानते हैं और शिलालेखों के संवत् पढ़ कर यही सिद्ध करने का यत्न करते हैं कि वे आगे पीछे हुये हैं। इनकी समकालिकता का पुरातत्त्वीय ठोस प्रमाण भी मिल चुका है। सन् 1964 ई. में हरयाणा प्रान्तीय पुरातत्त्व संग्रहालय गुरुकुल झज्जर की ओर से आचार्य भगवान् देव (स्वामी ओमानन्दजी) ने नौरंगाबाद के प्राचीन खण्डहर की खुदाई कराई थी। उसी खुदाई के समय कुषाण राजाओं की मुद्रा ढालने के ठप्पे (सांचे) मिले थे। उन ठप्पों में अनेक ठप्पे ऐसे हैं जिनमें एक ही फलक में कनिष्क और हुविष्क दोनों के सिक्के एक ही साथ बनाये जाते थे, उनसे सिद्ध है कि कनिष्क और हुविष्क दोनों एक ही साथ शासन कर रहे थे। राजतरंगिणी के लेख की पुष्टि इस पुरातत्त्वीय प्रमाण से हो जाती है। अत: पाश्चात्य इतिहासकारों की उक्त धारणा अमान्य है।

महात्मा बुद्ध के विषय में विभिन्न मतों में से कुछ मत यहां दिखाये जा रहे हैं, जिससे पाठकों को जानकारी हो सके।

1. प्राचीन चीनी, तिब्बती परम्परा-1027 वर्ष ई.पू.।

2. मुगलकालीन लेखक अबुलफजल -1366 वर्ष ईसापूर्व।

3. चीनी साहित्य के अनुसार अशोक 850 वर्ष ईसा पूर्व सिद्ध होता है। बुद्ध तथा अशोक की मृत्यु के बीच 371 वर्ष मानते हैं, अत: 850+371=1221 वर्ष ईसापूर्व बुद्ध का निर्वाण हुवा ऐसा मैक्समूलर ने सिद्ध किया है।

4. लंका के साहित्य के अनुसार मैक्समूलर ने महात्मा बुद्ध का निर्वाण समय 686 वर्ष ईसापूर्व माना है।

5. डॉ फ्लीट ने राजतरंगिणी के आधार पर बुद्ध का निर्वाण 1631 वर्ष ईसापूर्व सिद्ध किया है, अर्थात् आज से 1631+1993 (ई. सन्) =3624 वर्ष पूर्व ।

6. श्री पुरुषोत्तम नागेश ओक के मत में राजतरंगिणी के अनुसार महात्मा बुद्ध 1444 वर्ष ईसा पूर्व में निर्वाण को प्राप्त हुये थे।

राजतरंगिणी के अनुसार तीनों विद्वान् तीन प्रकार के परिणाम निकाल रहे हैं, यह इनकी अपनी-अपनी बुद्धि-भेद का कारण है। वैसे कल्हण ने राजतरंगिणी में एक ही समय दिया है, उसे समझना चाहिये ।

7. ए. बी. त्यागराज अय्यर एक शिलालेख के द्वारा युद्ध को 17वीं शताब्दी ईसा पूर्व सिद्ध करते हैं।

8. चीनी यात्री फाह्यान के अनुसार 1050 वर्ष ईसा पूर्व बुद्ध निर्वाण माना जाता है।

ये सभी मान्यतायें परस्पर एकमत नहीं हैं, पुनरपि वर्तमान प्रचलित मान्यता से बहुत प्राचीन सिद्ध करती हैं। भारतीय परम्परा के अनुसार हम पुराणों में दी गई वंशावलियों को सर्वाधिक प्रामाणिक और विश्वसनीय समझते हैं। पाठभेद उनमें अवश्य हैं, वे भी तुलनात्मक अध्ययन से ठीक किये जा सकते हैं। लंका और चीन जापान आदि की तिथियों में भेद का कारण यह हो सकता है कि भारत में बुद्ध धर्म का प्रसार होने के बहुत वर्षों बाद वहां पहुंचा है। इतने लम्बे अन्तराल में लोग सुनी सुनाई बातों पर भी विश्वास करने लग जाते हैं। जैसे कि यूंनानी लेखकों ने सुनी सुनाई बातों के आधार पर भारत के विषय में अनेक भ्रान्त धारणायें पैदा कर दी, वे ही आज परम प्रमाण के रूप में मानी जा रही हैं।

एक समय था जब सारा एशिया महाद्वीप बुद्धमय हो गया था। साधारण जनता द्वारा बुद्ध के प्रमुख शिष्य और बाद के भिक्षु श्रमण आदि भी बुद्ध के समान ही पूज्य और श्रद्धा की दृष्टि से ही देखे जाने लगे थे। उनकी दृष्टि में वे ही बुद्ध भगवान् थे। जैसे आज पढ़े लिखे लोग भी भारत में खड़ाऊँ की नई जोड़ी को 'रामपादुका' और मन्दिर के लिये खरीदी और बनाई गई राम नाम की ईटों को रामायणकालीन राम की भावना के अनुकूल अन्धश्रद्धावश पूजते हैं, उसी प्रकार एक समय में सभी संन्यासी बुद्ध के रूप में ही माने जाते थे। वहीं से कालक्रम परम्परा विकृत हो गई और किसी भी बड़े बौद्धभिक्षु की मृत्यु को बुद्धनिर्वाण तिथि का रूप धीरे-धीरे मिलता गया और अनेक मत खड़े होते गये ।

आवश्यकता इस बात की है कि पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर प्राचीन तिथि संवतों का सही और प्रामाणिक रूप में विश्लेषण किया जाये, जिससे भारतीय इतिहास भी सभी तिथियाँ पुन: परीक्षित हो सकें। महात्मा बुद्ध के समय से ही जैन तीर्थकर महावीर स्वामी का भी काल निर्धारण स्वत: हो जावेगा।

(आजतक का समय जानना हो तो लेख में दिये सन् में सन् 1993 के बाद 32 वर्ष जोड़कर जान सकते हैं)

महान् योद्धा- महाराणा सांगा

❑ राजेशार्य आट्टा, मो. 9991291318

प्रिय पाठकवृन्द! देश स्वतंत्र होने के बाद भी भारत की सरकार ने पर्यटन स्थल के रूप में केवल उन्हीं भवनों (किले, मीनार, मस्जिद, मकबरे आदि) को प्रसिद्ध व प्रोत्साहित किया है, जिन पर मुस्लिम आक्रान्ताओं के नाम की मोहर लगाई गई है। छोटी-बड़ी सभी परीक्षाओं में आक्रान्ताओं के विषय में ही प्रश्न पूछे जाते हैं। भोले विद्यार्थियों को अपने पाठ्यक्रम में आक्रान्ताओं का ही महिमा मण्डन मिलता है- अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नीति, शेरशाह सूरी का सड़क-निर्माण, बाबर का साहित्य-प्रेम, जहांगीर की न्याय की जंजीर, शाहजहाँ की भवन कला, अकबर की उदारता (महानता) आदि। सरकारों व इतिहासकारों के इस षड्यंत्र का परिणाम यह हुआ कि भारत की पीढ़ियों के सामने से उनके पूर्वज गायब कर दिये गये या उन्हें विकृत रूप में प्रस्तुत किया गया।

बाबर से लेकर औरंगजेब से भी आगे तक की पीढ़ियों को विद्यार्थी किसी मुक्ति दाता मन्त्र की तरह जपते हैं जबकि उन आक्रान्ताओं से टकराने वाले राणा प्रताप के पुत्र अमरसिंह (जिसने अकबर व जहांगीर से 17 साल टक्कर ली) को विलासी बताया जाता है, राणा प्रताप के पिता उदयसिंह को कायर व भगोड़ा प्रचारित किया जाता है और राणा प्रताप के दादा राणा सांगा को भारत पर आक्रमण करने के लिए बाबर को बुलाने वाला कहकर उसे घृणित बताया जाता है।

अपने विद्यार्थीकाल में मैं अपने अध्यापकों व प्राध्यापकों को बड़े गौरव के साथ बाबर की शक्ति का गुणगान करते हुए सुना करता था- वह दो आदमियों को बगल में दबाकर किले की दीवार पर दौड़ लगाता था। पर उन्होंने कभी नहीं बताया कि उसी बाबर से टकराने वाले राणा सांगा के शरीर में घाव के 80 निशान थे। हाथ व एक पैर गंवाने के बाद भी बाबर की सेना राणा सांगा की वीरता युद्ध में एक आँख, गंवाने के बाद भी बाबर की सेना उसकी वीरता से डरती थी और उसने लड़ने से मना कर दिया था। 1519 ई.में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी (द्वितीय) को परास्त कर बन्दी बनाने वाले राणा सांगा ने (3 मास तक) उसके साथ जिस उदारता व सम्मान का व्यवहार किया तथा उसका राज्य लौटाया, ऐसा उदाहरण किस मुस्लिम शासक का मिल सकता है? यही नहीं, इस उदार महाराणा ने तो अपने शत्रु रहे गुजरात के शहजादे बहादुर खां को भी अपने यहाँ तब शरण दी थी जब उसका भाई सिकन्दर खां उसके खून का प्यासा बना हुआ था (1524 ई.), पर राणा सांगा की मृत्यु (1524 ई.) के बाद इसी कृतघ्न बहादुर खाँ ने मेवाड़ पर दो बार (1533, 1535 ई.) आक्रमण कर विनाशलीला की।

हिन्दुओं को अपमानित करने वाला जजिया कर हटाने के कारण अकबर की उदारता के गीत गाने वालों को महाराणा सांगा की उदारता (राजनैतिक अदूरदर्शिता दिखाई नहीं दी। आमेर के लाचार राजा भारमल की पुत्री हीरकवर (बाद में मरियम उज्जमानी) को जोधाबाई बनाकर अकबर से उसके प्रेम की झूठी कहानियाँ गढ़ने वाले बेशरम फिल्म व नाटक कलाकारों को युद्ध में पकड़कर लाई गई रहीम खान की औरतों को ससम्मान वापस भेजने वाले महाराणा प्रताप का उज्ज्वल चरित्र दिखाई नहीं दिया। दो-चार भवनों के नाम लिखकर शाहजहाँ को इंजीनियर बादशाह बताने वाले अन्धों को महाराणा कुम्भा (राणा सांगा के दादा) द्वारा बनवाये गये मेवाड़ के 32 किले (विशेष कुम्भल गढ़ का किला, चित्तौड़ का विजय स्तम्भ आदि) दिखाई नहीं दिये।

इन्हें कैसे दिखाई देते, जब इतिहासकार न होते हुए भी भारत के कम्युनिस्ट प्रधानमंत्री (नेहरू जी) इतिहास में टाँग अड़ाते हुए 'हिन्दुस्तान की कहानी' में लिख गये - ''बाबर की शख्सियत दिलकश है, वह नई जागृति की ठीक-ठीक नुमाईदगी करने वाला शहजादा है, जो साहसी और बहादुर है, और कला, साहित्य और रहन-सहन का प्रेमी है। उसके पोते अकबर में और भी आकर्षण है और गुणों में भी वह उससे कहीं बढ़कर है। योग्य सेनापति की हैसियत से वह साहसी और दिलेर है, फिर भी उसमें बड़ी दया और कोमलता भी है। वह आदर्शवादी और सपनों का देखने वाला है, फिर भी वह कार्यक्षेत्र का आदमी है।

फिर नेहरू जी इस महान् देवता से लड़ने वाले महाराणा सांगा का का नाम भी कैसे लिख सकते थे। बाद में उनके निर्देश पर लिखने वाले इतिहासकार भी इन हिंन्दू वीरों को संकीर्ण मानसिकता वाला बताकर इन्हें पीछे धकेलने लगे। उसी षडयंत्र के अन्तर्गत भारत के इस महान् योद्धा के विषय में लिखा गया कि राणा सांगा ने दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम लोदी को हराने के लिए बाबर की सहायता मांगी अर्थात् बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए बुलाया।

श्री हरविलास सारड़ा ने 1924 ई. में महाराणा सांगा पुस्तक में लिखा- ''1517 ई. में सुल्तान सिकन्दर लोदी की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र इब्राहीम गद्दी पर बैठा। वह एक सेना सज्जित कर मेवाड़ की ओर चला। महाराणा इसका सामना करने को आगे बढ़े और दोनों सेनाएं हाडानटी (हाडौती) की सीमा पर के खातौली गाँव के पास मिलीं। दिल्ली की सेना राजपूतों की मारको न सह सकी और दोपहर (6 घंटे) की लड़ाई के पश्चात् युद्धस्थल से भाग गई। सुल्तान भी भाग गया और एक लोदी शाहजाद को राणा सांगा ने कैद कर लिया। यह शाहजादा थोड़े दिन पश्चात् दंडस्वरूप कुछ धन देने पर छोड़ दिया गया। इस लड़ाई में तलवार

वार से महाराणा का बायां हाथ कटा और एक तीर ने उन्हें जन्म भर के लिये लंगड़ा बना दिया।''

(दूसरी बार) सुल्तान इब्राहीम की सेना के मुख्य सेनापति.... महाराणा पर की गई चढ़ाई में प्रधान सेनापति मियां मक्खन के साथ थे। जब यह सेना महाराणा के प्रदेश में घुसी तो महाराणा राजपूतों को लेकर आगे बढ़े। ज्योंहीं धौलपुर के पास दोनों फौजें एक दूसरे के निकट आई त्योंहीं मिया मक्खन ने व्यूह रचना की, राजपूत अपने सदा के साहस के साथ आगे बढ़कर सुल्तान की सेना पर टूट पड़े और थोड़ी ही देर में शत्रु को भगा दिया। बहुत से वीर और योग्य पुरुष शहीद बना दिये गये और दूसरे तितर बितर कर दिये गये। यह लड़ाई सन 1518 ई. के आसपास हुई। राजपूतों ने सुलतान की भागती हुई सेना का बयाना तक पीछा किया।

डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने 'राजस्थान का इतिहास' में लिखा है-''बाबर ने धौलपुर की लड़ाई में राजपूतों की विजय होना लिखा है जो पिछली तवारीखों की तुलना में विश्वसनीय है। इसमें सन्देह नहीं कि महाराणा सांगा ने इन (दिल्ली, माण्डू तथा गुजरात के) सुल्तानों को बारी-बारी से पराजित कर अपने साहस और शौर्य का परिचय दिया था। इन विजयों से उत्तरी भारत का नेतृत्व भी उसे प्राप्त हो गया। ...दिल्ली के शासक को परास्त करने से राजनीतिक धुरी मेवाड़ की ओर घूम गयी और सभी शक्तियाँ, देशी और विदेशी, सांगा की शक्ति को मान्यता देने लगीं। मेवाड़ की शक्ति की यह चरम सीमा थी। हमारे शब्दों में, राणा इन विजयों मैं राजपूत संगठन का नेता स्वीकार कर लिया गया था और उसके व्यक्तित्व में हिन्दू शौर्य की आभा देदीप्यमान हो चली थी।

डॉ. आशीर्वादी लाल ने भी 'दिल्ली सल्तनत' के पृ. 233 पर लिखा है कि राणा सांगा ने दिल्ली की सेना को बुरी तरह परास्त किया। राणा सांगा ने मालवा व गुजरात की तरह दिल्ली के भी शासक को मात्र अपनी शक्ति का परिचय देकर ही सन्तोष कर लिया। उनके राज्य न हड़प कर अपने आदर्श की रक्षा की। फिर वह बाबर को क्यों बुलाता? ''बाबर के कथन का खण्डन करते हुए इतिहासकार डॉ गोपीनाथ शर्मा लिखते हैं-

''लेकिन राजपूत - स्रोत इसके विपरीत यह बताते हैं कि बाबर ने काबुल से राणा को कहलाया था कि वह इब्राहीम को परास्त करने में उसकी सहायता करे। उसने यह आश्वासन भी दिया कि विजयी होने की हालत में दिल्ली बाबर के राज्य में रहेगा और आगरा तक राणा के राज्य की सीमा रहेगी। इस सम्बन्ध की बातचीत सिलहदी के द्वारा हुई और राणा ने भी इस प्रस्ताव की स्वीकृति भिजवा दी। ... वैसे तो यह सूचना सीधे किसी समसामयिक पत्र में नहीं मिलती, परन्तु पुरोहित जी की डायरी जो राणा के दैनिक कार्य को उल्लिखित करती थी और जिससे ये अंश उद्धृत हैं, असम्भव नहीं दीख पड़ते। तर्क

की कसौटी पर कसने से भी यही प्रतीत होता है कि बाबर ही राणा की सहायता अजनबी देश में जाने के कारण माँग सकता है। सांगा को किस प्रकार को सहायता अपेक्षित थी जबकि उसने इब्राहीम को तथा गुजरात और मालवा के सुल्तानों को परास्त कर दिया था। बाद में सामन्तों के मना करने पर राणा ने बाबर की सहायता नहीं की)। (पृ.215)

श्री सुखवीर सिंह गहलोत ने 'राजस्थान का संक्षिप्त इतिहास' में लिखा है- "इन तीनों (दिल्ली, मालवा गुजरात) को हराकर उस (महाराणा सांगा) ने अपनी धाक जमा रखी थी। यदि वह चाहता तो दिल्ली पर भी कब्जा कर सकता था लेकिन दूरदर्शिता व आत्म विश्वास की कमी के कारण उसने स्वयं दिल्ली पर कब्जा न कर तैमूर के वंशज बाबर को दिल्ली पर कब्जा करने दिया।" (पृ.50-51)

बाबर के लेख के आधार पर राणा सांगा को बदनाम करने वाले लोग बाबर को भारत में बुलाने वालों -जिन दौलत खाँ लोदी (पंजाब के सूबेदार) और आलम खां (इब्राहीम लोदी का चाचा) का बाबर ने अपनी डायरी तुजुक ए बाबूरी में विस्तार से वर्णन किया है- की कोई चर्चा नहीं करते 'बाबर नामा' में लिखा है -

पंजाब के दौलत खाँ व उसके पुत्रों गाजी खाँ और दिलावर खाँ ने इब्राहीम लोदी से मुक्त होने के लिए बाबर के पास अपने दूत भेजे और सहायता की प्रार्थना की। बाबर के लिये इससे अधिक अनुकूल अवसर और क्या हो सकता था। (1519 से वह भारत पर आक्रमण के तीन बार असफल प्रयास कर चुका था उसने तुरन्त ही आक्रमण की तैयारी की और चौथी बार (1524 ई.) भारत पर प्रयाण किया। लाहौर को लूटकर व जलाकर बाबर दीपालपुर (देवालपुर) पहुंचा। वहाँ भी उसने नरसंहार किया। पंजाब के पिता-पुत्र उससे मिले। वे कभी बाबर की सहायता करते, कभी विद्रोह कर देते। दौलत खाँ के विद्रोह को देखकर बाबर ने समझा कि अब दिल्ली की ओर आगे बढ़ना उचित नहीं है। विद्रोहियों को भी कुछ न कुछ देकर शान्त किया।

इस आक्रमण के समय सम्राट् इब्राहीम का एक भाई (चाचा) सुल्तान अलाउद्दीन (आलम खाँ) बाबर से आ मिला। बाबर ने उसको देवालपुर देकर यह आशा दिलाई थी कि हिन्दुस्तान का साम्राज्य उसे दिया जायेगा। बाबर अपने विजित क्षेत्र अधिकारियों को सौंपकर काबुल चला गया। डॉ आशीर्वादीलाल ने 'मुगल कालीन भारत' में लिखा है कि पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी की यथेष्ट कामना पूरी न होने से उसने बाबर के अधीन क्षेत्रों (देवालपुर आदि) पर अधिकार कर लिया। आलम खाँ देवालपुर से भागकर काबुल में बाबर के पास चला गया और वहाँ बाबर से सन्धि कर ली। बाबर ने दिल्ली के राजसिंहासन के लिए आलमखाँ का अधिकार स्वीकार कर लिया और यह शर्त रख दी कि

आलमखाँ को सम्पूर्ण पंजाब बाबर की सर्वोच्च सत्ता के अधीन छोड़ना पड़ेगा। इस निश्चय के पश्चात् बाबर ने अपने दुर्गरक्षकों के साथ आलम खां को लाहौर के लिए रवाना कर दिया, पर लाहौर आते ही दौलत खां ने आलमखां को फुसलाकर बाबर के साथ हुई सन्धि भंग करवा दी और अपने लिए पंजाब या आत्मसमर्पण चाहा। इसके बाद वे दोनों इब्राहीम लोदी से -निपटने के लिए दिल्ली की ओर बढ़े। सुल्तान इब्राहीम ने इन्हें करारी हार दी। इन घटनाओं को सुनकर बाबर ने अन्तिम रूप से भारत पर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया। (पृष्ठ 18-19)

सोचिये, जिस बाबर (विदेशी) का स्वयं का जीवन इतना अस्थिर था, फिर उससे भारत का महान् योद्धा राणा सांगा क्या सहायता मांगता? यदि मांगी थी, तो ली क्यों नहीं, और इसके विपरीत उससे युद्ध क्यों किया ? क्या 'बाबरनामा'का हर वाक्य प्रमाण माना जा सकता है? देखिये-

'बाबरनामा' (अनुवादक श्री केशव कुमार ठाकुर) के पृष्ठ 587 पर बाबर ने लिखा है- "सोने के समय की नमाज के वख्त हमलोग ग्वालियर के उत्तर की तरफ उस चार बाग में जाकर ठहरे, जो ग्वालियर से दो मील पहले था और जिसके निर्माण के लिये हमने पिछले साल आदेश दिया था।

जबकि हिजरी 934, सन 1527-28 ईसवीं की घटनाओं में (बाबरनामा में) चार बाग के निर्माण का कोई उल्लेख नहीं मिलता। सोचिये, क्या बाबर जादूगर था, जो उसके आदेश देते ही बाग लग गया और एक साल के अन्दर ही वह मनुष्यों के ठहरने योग्य भी हो गया ? फिर बाबर ने एक-दो वर्ष बाद ही अपनी मृत्यु के बाद अपने शवको उस बाग में न दफनाकर काबुल (ग्वालियर से हजारों मील दूर अफगानिस्तान) में दफनाने की वसीयत क्यों लिखी? और वसीयत के अनुसार उसे काबुल में ही दफनाया गया, जबकि काबुल को भी उसने दिल्ली की तरह जीता था, वह उसकी जन्मभूमि नहीं थी। और जहाँ से बाबर आया था, वहाँ (फरगाना - समरकन्द) कितने बाग लगे हुए हैं, जो बाबर भारत में आते ही बाग लगाना शुरु कर देता ? वास्तविकता तो यही है कि वह बाग पहले था और बाबर ने उस पर कब्जा किया था। उसके द्वारा बनवाए गए महलों की भी यही कहानी है।

नोट- राणा सांगा के पूर्वजों व वंशजों के विषय में अधिक जानकारी के लिए लेखक की पुस्तक 'स्वाभिमान का प्रतीक: मेवाड़' पढ़ें। पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क लिए सम्पर्क करें - मो.नं. 9650522778, श्री दिनेशकुमार शास्त्री

रजत जयन्ती का निमन्त्रण और श्री मद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौंधा-देहरादून के रजत जयन्ती वर्ष में इससे जुड़ी हमारी कुछ स्मृतियां

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौंधा-देहरादून की स्थापना पच्चीस वर्ष पूर्व जून, 2000 में हुई थी। आगामी जून 2025 में पच्चीस वर्ष पूर्ण होने पर गुरुकुल अपनी स्थापना का रजत जयन्ती समारोह आयोजित कर रहा है। हम गुरुकुल की स्थापना से ही इससे जुड़े रहे हैं। हमने पच्चीस वर्षों में गुरुकुल की यात्रा को अपने चर्म चक्षुओं से देखा है और हमें सन्तोष है कि गुरुकुल ने अपनी यात्रा के पच्चीस वर्षों में उल्लेखनीय प्रगति की है। हम आशा करते हैं कि आगामी वर्षों में गुरुकुल अपने पुराने कीर्तिमानों को कायम रखते हुए नये कीर्तिमान स्थापित करेगा। गुरुकुलों से ही आर्यसमाज को वेदों एवं वैदिक साहित्य के विद्वान् मिलते हैं जिससे आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा करते हुए आगे बढ़ता है। वर्तमान में गुरुकुल में लगभग 125 ब्रह्मचारी आर्ष व्याकरण सहित सीबीएसई पाठ्यक्रम से अपना अध्ययन कर रहे हैं। हम इन सभी ब्रह्मचारियों से आशा करते हैं कि वह सब अपने जीवनकाल में आर्यसमाज से सक्रियता से जुड़े रहेंगे और आर्यसमाजों में अपनी विद्या एवं वाग्मिता से उपदेश व प्रवचनों से सहयोग करते रहेंगे जिससे सन् 2076 में आर्यसमाज के 200 वर्ष पूर्ण होने पर आर्यसमाज अधिकारी विद्वानों की संख्या एवं सदस्यों की संख्या में वृद्धि को प्राप्त होकर विश्व में अपनी पहचान को और अधिक ग्राह्य एवं स्वीकार्य बना सके।

माह जून, 2000 में गुरुकुल पौधा की स्थापना के समय गुरुकुल व इसके आसपास की भूमि पूरी तरह से सुनसान एवं चहुंओर ऊंचे-ऊंचे वृक्षों से आच्छादित थी। गुरुकुल के चारों ओर लगभग 1 किमी. क्षेत्र में मनुष्यों के निवास नहीं बने थे। अब 25 वर्ष व्यतीत होने पर कुछ कुछ दूरी पर निवास व कार्यालय आदि बने दिखाई देने लगे हैं। स्थापना के समय स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने, जो उन दिनों आचार्य हरिदेव जी के नाम से जाने जाते थे, यहां पहुंच कर गुरुकुल की स्थापना की थी। गुरुकुल के लिये भूमि के दाता स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के सुपुत्र श्री कान्त वर्मा जी थे। आचार्य के रूप में आचार्य भीमसेन शास्त्री जी और आचार्य युधिष्ठिर जी के साथ लगभग 7-8 ब्रह्मचारी यहां दिल्ली के गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली से लाये गये थे। इस गुरुकुल का आचार्य एक 20 वर्षीय युवक महाराष्ट्र के भण्डारा निवासी स्वनाम धन्य "धनंजय आर्य जी" को बनाया गया था। आचार्य एवं ब्रह्मचारियों के लिए एक अस्थाई निवास वा टीनों की छत से युक्त एक कमरा बना कर उसी में सब लोग रहा करते थे। यज्ञ के लिये घास-फूस की एक बृहत् यज्ञशाला बनाई गई थी जिसमें चतुर्वेद पारायण यज्ञ किया गया था। जल एवं विद्युत् की भी व्यवस्था आरम्भ के दिनों में गुरुकुल परिसर में नहीं थी। वनों से घिरा होने के

कारण गुरुकुल के प्रांगण में वन्य जीवों सहित सर्प आदि के यदा कदा दर्शन आचार्यों एवं ब्रह्मचारियों को होते रहते थे। गुरुकुल की स्थापना के साथ ही एक विशाल एवं भव्य यज्ञशाला एवं ब्रह्मचारियों के लिए छात्रावास सहित आवश्यक आवासीय भवनों के निर्माण की रूप रेखा स्वामी प्रणवानन्द जी ने तैयार की और उसे वितीय साधनों से पोषित किया। आचार्य धनंजय जी ने भवनों के निर्माण सहित बालकों के अध्ययन को आगे बढ़ाया और ब्रह्मचारियों को भोजन एवं अध्ययन में किसी प्रकार की बाधायें नहीं आने दी। वर्तमान में यहां एक तीन मंजिला भव्य एवं विशाल वेदभवन, बृहद् यज्ञशाला, स्वागत कक्ष, अध्ययन कक्ष, बृहद् पुस्तकालय, भोजनशाला, छात्रावास, अतिथियों के लिए तीन कुटियायें, गोशाला सहित मुरुकुल की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये ट्यूबवेल व पानी की ऊंची टंकी है। योग्य आचार्यों, ब्रह्मचारियों तथा गुरुकुल के स्वच्छ एवं सुरम्य वातावरण का प्रभाव यह रहा कि यहां योग्य ब्रह्मचारी विद्यास्नातक बने जिन्होंने स्थानीय एवं दक्षिण भारत के तिरुपति बाला जी मन्दिर ट्रस्ट सहित देश के अनेक भागों में जाकर अष्टाध्यायी एवं व्याकरण विषयक प्रतियोगिताओं में भाग लेकर लोगों से अपनी स्मरण शक्ति एवं ज्ञान का लोहा मनवाया और वहां संस्कृत व्याकरण प्रतियोगिता में एक साथ स्वर्ण, रजत एवं ताम्र पदकों को प्राप्त किया। आज भी गुरुकुल के ब्रह्मचारी स्थानीय व राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतियोगिताओं में स्वर्ण व रजत पदक लाने की परम्परा को बनाये रखे हुए हैं। गुरुकुल में जो योग्य ब्रह्मचारी तैयार हुए हैं उनमें से कुछ प्रमुख नाम आचार्य डा. रवीन्द्र कुमार शास्त्री, आचार्य डा. अजीत कुमार शास्त्री दिल्ली, आचार्य डा. शिवकुमार वेदि, आचार्य डा. शिवदेव आर्य शास्त्री आदि हैं। गुरुकुल के ही एक स्नातक श्री दीपक कुमार ने विद्या प्राप्त करने सहित खेलों में ही उच्च स्थान अर्जित किया है। उन्होंने भारतीय वायु सेना में नियुक्त होकर एशियन खेलों में शूटिंग में रजत पदक लेकर देश को गौरव प्रदान किया है। इसके बाद उनका ओलम्पिक खेलों के लिए चयन हुआ था परन्तु यहां वह पदक प्राप्त करने में सफल नहीं हो सके। गुरुकुल में प्रतिभा विकास की दृष्टि से अनेक ऐसे स्नातक भी हैं जिन्होंने यूजीसी की नैट परीक्षा उत्तीर्ण की है। इस परीक्षा को उत्तीर्ण कर किसी विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर पर कार्य करने की अर्हता प्राप्त हो जाती है। इसके अतिरिक्त नैट उतीर्ण परीक्षार्थी अपने किसी विषय में रिसर्च हेतु सरकारी सहायता प्राप्त कर अनुसंधान व शोध कर पीएचडी की उपाधि भी प्राप्त कर सकते हैं। विगत 25 वर्षों में गुरुकुल के अनेक विद्यार्थियों ने पी.एच.डी. की शोधोपाधियां भी प्राप्त की हैं। यह भी गुरुकुल की उपलब्धियां हैं। इस कारण से गुरुकुल का भविष्य में पोषण एवं संचालन आवश्यक है जिससे यहां वैदिक विद्वान् तैयार हों जो उच्च कोटि का वैदिक साहित्य तैयार करने सहित देश देशान्तर में वेद प्रचार में समर्थ हो। गुरुकुल ने अपने परिसर में अनेक बार आर्य वीर दल के प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर के शिविरों का

आयोजन भी किया है। गुरुकुल के द्वारा अतीत में देश के सभी गुरुकुलों का एक सफल गुरुकुल सम्मेलन भी आयोजित किया था। अन्य अनेक विषयों पर समय समय पर गोष्ठियां एवं सम्मेलन भी गुरुकुल में आयोजित किये हैं जिसमें विषय के अधिकारी विद्वानों को बुलाकर श्रोताओं को उनके जान एवं अनुभवों से लाभान्वित किया है।

गुरुकुल की स्थापना से अब तक प्रत्येक वर्ष गुरुकुल का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न होता रहा है जिसमें प्रायः किसी एक वेद से वेदपारायण यज्ञ सम्पन्न किया जाता है। इन उत्सवों में आर्यजगत् के विख्यात विद्वान् भी उपदेश के लिये आते हैं। हम ऐसे सभी आयोजनों में सम्मिलित होते रहे हैं। हमने गुरुकुल क्रे उत्सवों में आये प्रायः सभी विद्वानों को एक श्रोता के रूप में सुना है। हमने गुरुकुल में आचार्य पं. राजवीर शास्त्री सम्पादक दयानन्द-सन्देश, डा. रघुवीर वेदालंकार जी, डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी, आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी, डा. सोमदेव शास्त्री मुम्बई, डा. धर्मवीर जी अजमेर, आचार्य बालकृष्ण-पतंजलि योगपीठ, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, आचार्य आशीष दर्शनाचार्य, डा. महावीर अग्रवाल, डा. दिनेश शास्त्री, डा. रूपकिशोर शास्त्री,, पं. धर्मपाल शास्त्री मेरठ, डा. सूर्यादेवी चतुर्वेदा जी, आचार्या अन्नपूर्णा जी, पं. ओम्प्रकाश वर्मा, पं. सत्यपाल पथिक, पं. सत्यपाल सरल, पं. नरेश दत्त आर्य, श्री कैलाश कर्मठ, श्री कुलदीप आर्य आदि अनेक विद्वानों को देखा व सुना है। अतिथियों के निवास एवं भोजन आदि की सभी व्यवस्थायें उत्तम होती हैं। तीन दिन का उत्सव अतिथियों विद्वानों के उपदेश श्रवण सहित ऋषि भक्तों से मिलने का एक अवसर देता है। इसके साथ ही यहां उत्सव पर आने वाले आर्य साहित्य के पुस्तक विक्रताओं से पुस्तकें एवं यज्ञ में उपयोगी यज्ञकुण्ड एवं अनेक आवश्यक वस्तुओं आसन व यज्ञपात्रों को क्रय करने की सुविधा भी सुलभ होती है। हमने यहां आये प्रायः सभी आर्यजनों को आयोजन में विद्वानों व भजनोपदेशकों के गीतों को सुनकर सन्तुष्ट एवं प्रसन्न देखा है। गुरुकुल ने अपने आयोजनों को घर-घर पहुंचाने की दृष्टि से पिछले 10 वर्ष से अधिक समय से इसके सभी कार्यक्रमों को अपने यूट्यूब चैनल Gurukul Pondha Dehradun सहित फेस बुक पेज Gurukul Pondha Dehradun से लाइव प्रसारित करने की व्यवस्था भी की हुई है। इससे आयोजन में न पहुंच सकने वाले गुरुकुल प्रेमी देश विदेश में अपने घरों में बैठ कर सभी कार्यक्रमों को देख व सुन सकते हैं। आज के युग में यह एक बहुत बड़ी सुविधा है। हम भी इसका उपयोग करते हैं और सभी आर्य संस्थाओं यथा टंकारा व अन्य स्थानों पर होने वाले बृहद आर्य महासम्मेलनों आदि के लाइव प्रसारणों से लाभान्वित होते हैं।

हमें स्मरण है कि गुरुकुल की सन् 2000 में स्थापना होने के बाद से वर्ष 2018 तक हम गुरुकुल के आचार्य धनंजय जी के साथ गुरुकुल के उत्सव के निमन्त्रण देने मई महीने की गर्मी के दिनों में देहरादून के अपने सभी परिचित आर्य सज्जनों के परिवारों में स्कूटर पर बैठकर

जाया करते थे। हमें एक आर्यसमाज के विद्वान् श्री चण्डी प्रसाद ममगाई शर्मा जी का नाम याद है जिनका एक लेख ऋषि दयानन्द के जीवन एवं कार्यों पर वेदवाणी के ऋषि दयानन्द के जीवन विषयक दुर्लभ सामग्री के विशेषांक में प्रथम स्थान पर छपा था। वह ऋषि दयानन्द के भक्त थे और ऋषि जन्मभूमि टंकारा के निकट के स्थानों पर वर्षों तक रहे थे। उन्हें ऋषि के घर से निकलने से लेकर पूरे जीवन का घटनाचक्र स्मरण था। वह गुजरात के टंकारा के निकटवर्ती स्थानों पर खुद भी पैदल घूमे थे। आचार्य धनंजय जी प्रत्येक वर्ष इनके निवास पर जाकर इन्हें गुरुकुल के उत्सव में आने के लिए आमंत्रित करते थे। इनसे गुरुकुल के लिये दान भी मिलता था। यह अपनी अधिक आयु एवं साधनों के अभाव के कारण कभी गुरुकुल आ नहीं सके। देहरादून के किसी आर्यसमाज में भी नहीं गये थे। यदि हमने वेदवाणी में इनका लेख न पढ़ा होता तो हम भी इनके कभी दर्शन न कर पाते। वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून ने कई वर्ष पहले हमारे निवेदन पर इनका सम्मान किया था। तब हमारे अनेकानेक आग्रहों के कारण श्री चण्डी प्रसाद शर्मा जी आश्रम आये थे। ऐसे अनेक लोग देहरादून में रहे हैं जिनके दूरस्थ निवासों पर हम आचार्य धनंजय जी के साथ जाकर उनसे उत्सव में सम्मिलित होने का आग्रह करते थे और वह उत्सव में आते भी थे। ऐसे ही वृद्ध ऋषिभक्तों में कर्नल राम कुमार आर्य, श्री दौलत सिंह राणा एवं श्री विनय मोहन सोती जी भी थे। कर्नल राम कुमार आर्य जी ने तो अपने लिये एक कुटिया भी गुरुकुल परिसर में बनवाई थी जिसमें वह उत्सव के दिनों में आकर अन्य विद्वानों के साथ रहते थे। हमें यह भी अवसर मिला की गुरुकुल के प्रथम उत्सव से लेकर वर्ष 2018 के उत्सवों तक हमने उत्सवों में जो देखा व सुना था उन समाचारों का संकलन कर इसे सोशल मीडिया सहित आर्यसमाज की पत्र-पत्रिकाओं को प्रकाशनार्थ प्रेषित करते रहे। हमारे प्रेषित सभी समाचार अनेक सोशल मीडिया से जुड़ी साइटों पर भी प्रकाशित होते रहे हैं जो वर्तमान में भी वहां पर उपलब्ध हैं ऐसा हमारा अनुमान है। स्थानीय समाचार पत्रों में भी हमारे समाचार व लेख प्रकाशित होते रहे।

गुरुकुल पौंधा ने अपने 25 वर्षों के कार्यकाल में आशातीत उन्नति की है। इसका समस्त श्रेय स्वामी प्रणवानन्द सहित आचार्य धनंजय जी व उनकी गुरुकुल की टीम सहित आर्यसमाज के स्थानीय व देश विदेश के दानी महानुभावों को हैं। हम गुरुकुल की उन्नति में सहायक बने गुरुकुल प्रेमी सभी बन्धुओं को भी नमन करते हैं। हम आशा करते हैं कि गुरुकुल में भावी समय में व्याकरण एवं वेदों के अधिकारी विद्वान् बनेंगे जो आर्यसमाज के वेद प्रचार मिशन को आगे बढ़ायेंगे जिससे गुरुकुल के यश एवं सार्थकता में वृद्धि होगी। ईश्वर से प्रार्थना है गुरुकुल आगामी वर्षा में पहले से भी अधिक उन्नति करे जिससे स्वामी प्रणवानन्द जी, आचार्य धनंजय जी, सभी आचार्यों एवं भूमिदाता श्री कान्त वर्मा जी का स्वप्न साकार हो सके।

तेल, घी, चिकनाई व मोटापा एक चुनौति

❑ लेखक: श्री दिनेश शर्मा, सुप्रसिद्ध विज्ञान समीक्षक।

अस्वास्थ्यकर आहार और आरामप्रद जीवन शैली के विरुद्ध जागरूकता पैदा करने के लिए राष्ट्रीय अभियान चलाना चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी अपने 'मन की बात कार्यक्रम में एक बड़ी स्वास्थ्य चुनौति मोटापा पर प्रमुखता से प्रकाश डाला था। मोटापा असंक्रामक रोगों जैसे मधुमेह, हृदय रोग और कैंसर के हेतुओं में एक प्रमुख कारण है। प्रधानमंत्री जी ने कहा कि देश में मोटापे की चुनौति से सामान्य प्रयास जैसे भोजन में तेल को कम करके निपटा जा सकता है। उन्होंने कहा कि ''आपको प्रतिमाह 10 प्रतिशत तेल कम करने का निर्णय लेना चाहिए। यह मोटापा कम करने का एक महत्वपूर्ण कदम होगा''।

प्रधानमंत्री जी ने कहा कि ''भोजन में तेल कम प्रयोग करना और मोटापे का उपाय करना न केवल व्यक्तिगत चुनाव है अपितु यह उसका परिवार के प्रति दायित्व भी बनता है उन्होंने एक अभियान की भी शुरूआत की जिसमें उन्होंने 10 लोकप्रिय व्यक्तियों को भोजन में 10 प्रतिशत तेल कम करने का अनुरोध किया व उन्हें प्रत्येक को 10 अन्य व्यक्तियों को 10 प्रतिशत तेल प्रयोग करने का संदेश आगे से आगे प्रेषित करने की प्रार्थना की। उन्होंनें यह आशा की कि इस प्रकार मोटापे के विरुद्ध लड़ने में मदद मिलेगी।

प्रधानमंत्री की ओर से जनता को स्वास्थ्य संदेश देना और असंसर्गज रोगों व तेल की खपत के प्रति जागरूकता बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण है। किंतु प्रधानमंत्री जी का यह प्रयास समस्या के समाधान का एक पक्ष है। वास्तव में असली समस्या जिस पर चर्चा नहीं होती वह तेल का नहीं अपितु भोजन में वसा/फैट का अत्यधिक सेवन है। मुख्यत: ठोस वसा जिसे ट्रांस फैट कहा जाता है, जो वनस्पिति घी, ठोस मक्खन, क्रीम, मांस और इनसे बनने वाले बाजारू खाद्य पदार्थों में अधिक होती है वह असंक्रामक रोगों का मुख्य कारण मानी गई है। यह चॉकलेट, केर्ज, आईसक्रीम, बिस्कुट, कुकीज, केक, ब्रेकफास्ट सीरीलज, बर्गर, ब्रेड, बन, रस्क, नमकीन आदि सभी बाजारी खाद्य वस्तुओं में मुख्यत: होती है। अन्य प्रकार की वसाओं का सेवन भी हानिकारक है। हैदराबाद स्थित पोषकता के राष्ट्रीय संस्थान के खाद्य मानकों के अनुसार संतृप्त वसा की मात्रा कोकोनट तैल, घी और पॉम ऑयल में उच्चतम होती है। खाद्य तेलों के उपभोग में कमी करना समस्या का केवल आधा हल है। अत: जन स्वास्थ्य की रक्षा के लिए न केवल घी तेल

अपितु खाद्य इंडस्ट्री निर्मित पैकेज्ड़ उत्पादों व डेरी प्रोडक्ट्स में कटौती अत्यावश्यक है। मोटापे के विरुद्ध अभियान को तेल व घी से आगे अस्वास्थ्यकर आहार व आरामपसंद जीवन शैली तक ले जाना चाहिए।

प्रधानमंत्री जी ने लोगों के स्वेच्छापूर्वक खाद्य तेलों में 10 प्रतिशत कटौती कहकर मोटापे और असंक्रामक रोगों से निपटने का दायित्व व्यक्तिगत स्तर पर डाल दिया है। दशकों से अनुभूत जन स्वास्थ्य के प्रति सामाजिक बोध यह कहता है कि स्वास्थ्यकर आहार विहार की आदतें हर व्यक्ति की व सामूहिक रूप से सभी की सामाजिक जिम्मेदारी है। सरकार का कर्तव्य होता है कि वह ऐसी नीतियां बनाने का काम करे जिससे ऐसा वातावरण निर्मित हो जिससे लोगों में कम वसा युक्त हितकर आहार, विहार, जीवन शैली अपनाने की सूझ पैदा हो। मोटापाकारक वातावरण में किसी व्यक्ति से स्वास्थ्यकर भोजन व जीवन शैली का पालन करने की आशा नहीं की जा सकती है। यह वातावरण सरकार की नीतियों से निर्मित होता है और यह जनसमुदाय को स्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों के चुनाव का अवसर प्रदान नहीं करता है।

मोटापा और असंक्रामक रोगों से निपटान के लिए हमें व्यक्तिगत प्रयासों के साथ-साथ एक जनसंख्या व्यापी बहु आयामी (स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण, अर्थ व्यवस्था आदि) बहुक्षेत्रीय दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए भारत खाद्य तेलों के लिए पूर्णरूप से आयात पर निर्भर है और राजकीय नीतियां पामऑयल के आयात को बढ़ावा देती है। यह तेल कुल आयातित तेलों का 60 प्रतिशत है। पामऑयल, खाद्य पदार्थ इंडस्ट्री का बहुत चहेता है। जबकि बहुत से अध्ययनों में इससे हृदयस्रोतों, धमनियों के रोगों के बढ़ने का कारण पाया गया है। सरकार द्वारा खाद्य तेल आयात की ऐसी नीतियां बनाई जानी चाहिएं जिससे लोगों के स्वास्थ्य को खतरा न हो।

कुछ दशकों से भारत में लोगों की खाने पीने की आदतें बहुत बदल गई हैं। आय में वृद्धि, शहरीकरण और खाद्य पदार्थों का वैश्वीकरण होने से जंक फूड, फास्ट फूड की लोकप्रियता के कारण लोग भोजन में अत्यधिक मात्र में नमक, मीठा व वसा का सेवन कर रहे हैं। भोजन व आहार की परिकल्पना ही बदल गई है। सरकार की नीतियों का इस परिवर्तन में बहुत बड़ा योगदान है। सरकार नीतियों के तहत चिप्स, कोला, कुकीज, नमकीन और अन्य खाद्य पदार्थों के उद्योग को बहुत सबसिडी सहायता अनुदान प्रदान की जाती है। फूड कंपनियों को जंक फूड आईट्म्स की ब्रांडिंग करने को प्रोत्साहित किया जाता है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए सरकारों द्वारा ताजा फल और सब्जियों को सस्ते दामों पर उपलब्ध कराने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए किंतु सरकारी नीतियां प्रोसेस्ड प्रतिसंस्कृत खाद्य, फलों व सब्जियों को बढ़ावा देती हैं। दूसरी ओर खाद्य उद्योगों के आदेश व इशारे पर जंक फूड के नियामकों जैसे पैकिंग्ज पर हानिकारक चेतावनी का साफ साफ प्रकाशन, मार्केटिंग पर प्रतिबंध और बच्चों के दृष्टिगत स्कूल, संस्थान, कैंटीन, स्टाल आदि में इनकी बिक्री पर रोक के नियमों को अवरुद्ध किया जाता है। विडंबना यह है कि देश का खाद्य सुरक्षा प्राधिकरण अग्रणी जंक फूड कंपनियों के साथ मिलकर "ईट राईट इंडिया" सुरक्षित, स्वस्थ और सही खाएं अभियान चला रहा है। खाद्य सुरक्षा नियामक इन कंपनियों के साथ भागीदार बना हुआ है। भारतीय खाद्य नियामक प्राधिकरण द्वारा 2019 में "ट्रांस फैट से आजादी" शुरू हुआ अभियान जंक फूड उद्योग के सख्त विरोध के कारण 2025 तक भी लक्ष्य को अप्राप्त रहा है।

ऐसी ही कहानी आरामप्रद जीवन शैली को और शारीरिक निष्क्रियता को लेकर है। ये दोनों ही अस्वस्थ भोजन के साथ मोटापे के प्रमुख कारण हैं। जबकि शारीरिक सक्रियता और व्यायाम व्यक्तिगत विषय कहा जाता है तथापि सरकारी नीतियां समाज के स्तर पर उपयुक्त सक्रिय वातावरण बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उदाहरण के लिए सैर और व्यायाम के उपयुक्त सार्वजनिक स्थान उपलब्ध कराना शारीरिक सक्रियता को बढ़ावा देने के साधन है। सार्वजनिक परिवहन का प्रयोग, पैदल यात्रियों व साईकिल चालकों के लिए सड़कों के दोनों ओर रास्तों पायदानों का निर्माण करवाना और कारों व वाहनों के उपयोग को हतोत्साहित करना ये कुछ उपाय किए जा सकते हैं। सरकारी नीतियों के ये प्रयास व्यक्तिगत आदतों, जीवन व स्वास्थ्य को लेकर निर्णयों को बदलने में प्रभावी होते हैं। खाद्य तेलों को भोजन में कम करने के व्यक्तिगत उपाय मोटापा चक्र में एक कंगूरा मात्र हैं। स्वास्थ्यकर आहार व सक्रिय जीवन शैली कारकों को लेकर सरकारी नीतियां बनाए जाने की आवश्यकता के प्रति हमारा ध्यान नहीं हटना चाहिए। **"आयुः कामयमानेन धर्मार्थसुख साधनम् । आयुर्वेदोपदेशेषु विधेयः परमादरः॥"** अर्थात् धार्म, अर्थ और सुख की साधन आयु की कामना करने वाले पुरुष को आयुर्वेद में निर्दिष्ट उपदेशों का परम आदर करना चाहिए।

साभार दि ट्रिब्यून चंडीगढ़

डॉ. नरेश दलाल द्वारा हिन्दी में प्रस्तुत

लूट का सिस्टम

❑ डॉ. नरेश

कारवां लुटने का पश्चाताप क्या है?
लूट का हिस्सा मिले तो पाप क्या है ?

कारवां लुटवाते हैं जो उनके लिए
देश क्या भाई बहिन मां-बाप क्या है ?

हाथ मिलाकर वो जो मुस्कराए हुए हैं
क्या पता नेता के भीतर जाप क्या है ?

जाननी चाहती है जनता झूठ को भी
रोजनामों में छपा यह छाप क्या है ?

यह लूट की सत्ता ही पूरा सच जो है
लुट रहे हैं उनके सिर पे श्राप क्या है ?

यहां एक जाता है तो आता दूसरा है
राज का ये सिलसिला चुपचाप क्या है?

मैं भी इस सिस्टम का हिस्सा हूं नरेश
गुनहगारों में नाम बॉटम टॉप क्या है ?

मैं जो बदलूंगा तो बदलेगा जमाना
मुझे बदलने का जहां पे माप क्या है ?

प्रकाशनार्थ सूचना

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर दिल्ली में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर 2025 इस बार दिल्ली में दिनांक 7 जून से 15 जून 2025 तक संस्कार शिक्षा कुंज स्कूल, गोंडा रोड, गली नं. 9 बी, स्वतन्त्र नगर, नरेला, दिल्ली-110040 (मोबाईल नं0 9315254900) में आयोजित किया जा रहा है। इसमें भाग लेने के लिए 13 वर्ष से अधिक आयु की आर्य वीरांगनाएं दिनांक 26 मई 2025 तक अपने नाम निम्नलिखित नम्बरों पर देवें ताकि व्यवस्था सुचारू रूप से हो सके ।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति	मृदुला चौहान	आरती खुराना	नीरज कुमारी
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्ष
9672286863	9810702760	9910234595	8920208536

हमारी विशिष्ट औषधियाँ

संजीवनी तैल

यह तैल घाव के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुए घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भरकर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों में और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है।

मूल्य: 160/- रुपये

च्यवनप्राश

शास्त्रोक्त विधि से तैयार किया हुआ स्वादिष्ट सुमधुर और दिव्य रसायन (टॉनिक) है। इसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खांसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक तथा सभी हृदयरोगों की उत्तम औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका निरन्तर सेवन समूल नष्ट करता है। निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है। च्यवन ऋषि इसी रसायन के सेवन से जवान होगये थे।

साधारण - 350 रु०, विशेष - 550 रु०, शुगर फ्री - 700 रु०

नेत्रज्योति सुर्मा

सुर्मे तो बाजार में पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं परन्तु इतना लाभप्रद और सस्ता सुर्मा मिलना कठिन है। इसके लगाने से आंखों के सब रोग जैसे आंखों से पानी बहना, खुजली, लाली, जाला, फोला, नजर की कमजोरी आदि विकार दूर होते हैं तथा बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। दुखती आंखों में भी इसका प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है।

मूल्य : 50 रुपये

बलदामृत

हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आजाता है। पीनस (सदा रहनेवाला जुकाम और नजले) की औषधि है। वीर्यवर्धक, कासनाशक, राजयक्ष्मा, श्वास (दमा) के लिए लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करता है तथा अत्यन्त रक्तवर्धक है।

मूल्य: 220/- रुपये

गुरुकुल झज्जर के प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि मुनि)	४०-००
३.	कारिकाप्रकाश (पं० सुदर्शनदेव)	२५-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (पं० सुदर्शनदेव)	१५-००
५.	फिट्सूत्रप्रदीप (पं० सुदर्शनदेव)	१०-००
६.	अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग) "	६५०-००
७.	काव्यालंकारसूत्राणि (आचार्य मेधाव्रत)	२५-००
८.	दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
९.	दयानन्ददिग्विजयम् (१-२ भाग) "	३५०-००
१०.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (पं० चन्द्रमणि)	२५०-००
११.	योग[illegible]भाष्य (पं० आर्यमुनि)	२०-००
१[illegible]	[illegible]भाष्य (पं० आर्यमुनि)	८०-००
[illegible]	[illegible]भाष्य (३ भाग)	२६०-००
१[illegible]	[illegible]हार[illegible]नी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१५.	छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (पं० शिवशंकर)	२५०-००
१६.	ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
१७.	वैदिक गीता (स्वामी आत्मानन्द)	६०-००
१८.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प "	३०-००
१९.	दयानन्दप्रकाश (स्वामी सत्यानन्द)	८०-००
२०.	धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	८०-००
२१.	वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२२.	देशभक्तों के बलिदान	१५०-००
२३.	सत्यार्थप्रकाश (स्वामी दयानन्द)	२००-००
२४.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
२५.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (स्वामी दयानन्द)	५-००
२६	व्यवहारभानु (स्वामी दयानन्द)	१५-००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योग	४०-००
२८.	चारों वेद मूल	८८०-००
२९.	सामपदसंहिता	२५-००
३०.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३१.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३२.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	३५-००
३३.	घर का वैद्य (वैद्य बलवन्तसिंह) १-५ भाग	१००-००
३४.	संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
३५.	स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३६.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१२००-००
३७.	ब्रह्मचर्य के साधन (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
३८.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-१) "	६००-००
३९.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००
४०.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४१.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	४५०-००
४२.	प्राचीन भारत में रामायण के मन्दिर	२००-००
४३.	नौरंगाबाद की मृन्मूर्तियां	२५०-००
४४.	अगरोहा की मृन्मूर्तियां	८००-००
४५.	प्राचीन ताम्रपत्र एवं शिलालेख	२००-००
४६.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-२)	३००-००
४७.	छन्दःसूत्रम् (हिन्दी भाष्य सहित)	१२०-००
४८.	आर्य सत्संग पद्धति	१०-००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-RTK/85-3/2023-25

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या
श्री विनय जी आर्य
स्थान मन्त्री दिल्ली आर्य प्रति. सभा
डा० 15 हनुमान रोड आर्यसमाज
जिला नई दिल्ली 110001

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-डॉ० विक्रम सिंह शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।